॥ श्रीहरिः ॥

बालकके आचरण

॥ श्रीहरिः ॥

विषय-सूची

विषय			पृष्ठ-संख्या
१-देशकी लाज	....	....	५
२-धर्मका पालन	....	....	९
३-जातिकी मर्यादा	....	....	११
४-त्यागने योग्य काम	....	....	१३
५-बिना पूछे न करो	....	....	१५
६-क्षमा माँग लो	....	....	१६
७-त्याग	....	....	१८
८-महान् बनोगे	....	....	२०
९-स्मरण रखो	....	....	२२
१०-धनका उपयोग	....	....	२४
११-बलका उपयोग	....	....	२७
१२-बुद्धिका उपयोग	....	....	२९
१३-साथ-साथ	....	....	३१

॥ श्रीहरिः ॥

बालकके आचरण

(१)

देशकी लाज

हम उस देशमें उत्पन्न हुए हैं—

जिस देशमें मर्यादापुरुषोत्तम

भगवान् रामने अवतार लिया।

जिस देशमें लीलापुरुषोत्तम

भगवान् कृष्णने अवतार लिया।

हम उस देशमें उत्पन्न हुए हैं—

जिस देशमें महर्षि वाल्मीकिने

रामायणका गान किया।

जिस देशमें महर्षि वेदव्यासने

महाभारतका निर्माण किया।

हम उस देशमें उत्पन्न हुए हैं—

जिस देशमें युधिष्ठिर-
जैसे धर्मात्मा हुए।

जिस देशमें दधीचि-
जैसे दानी हुए।

जिस देशमें हरिश्चन्द्र-
जैसे सत्यवादी हुए।

हम उस देशमें उत्पन्न हुए हैं—

जिस देशमें राणाप्रताप-जैसे प्रणवीर हुए।

जिस देशमें छत्रपति
शिवाजी-जैसे धीर-वीर हुए।

जिस देशमें गुरु गोविन्दसिंह-जैसे कर्मवीर हुए।

हम उस देशमें उत्पन्न हुए हैं—

जिस देशमें लोकमान्य तिलक-जैसे कर्मयोगी हुए।

जिस देशमें महामना मालवीयजी-जैसे निष्ठावान् हुए।

जिस देशमें महात्मा गांधी-जैसे सत्य-अहिंसाके पुजारी हुए।

हमारा देश—

भीम और अर्जुन-जैसे वीरोंका देश है।

सावित्री और अनुसूया-जैसी पतिव्रताओंका देश है।

गोस्वामी तुलसीदास और सूरदास-जैसे भक्तोंका देश है।

हमारा देश—

गौरवशाली है।

वैभवशाली है।

उन्नतिशाली है।

हम ऐसा काम नहीं करेंगे—

जो हमारे देशकी मर्यादाके अनुकूल न हो।

जो हमारे देशके सम्मानके अनुकूल न हो।

हम देशके गौरवकी रक्षा करेंगे।

हम देशके सम्मानकी रक्षा करेंगे।

हम देशकी लाज रखेंगे।

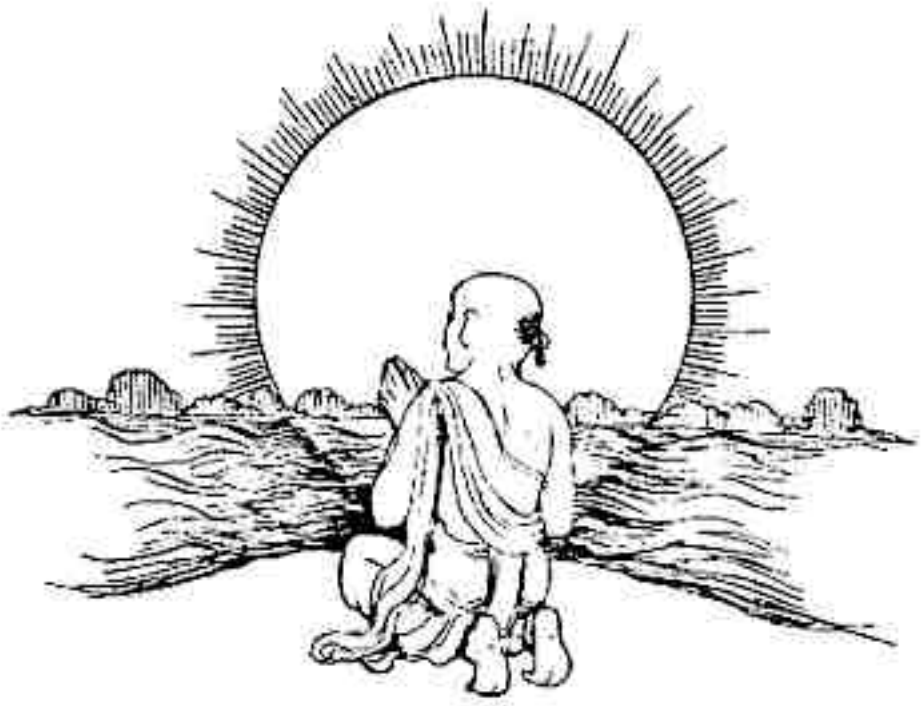

(२)

धर्मका पालन

भगवान् धर्मकी रक्षाके लिये अवतार लेते हैं।
सत्पुरुष धर्मकी रक्षा करते हैं।
अच्छे लोग धर्मका पालन करते हैं।

जो धर्मकी रक्षा करता है।
धर्म उसकी रक्षा करता है।
जो धर्मका पालन करता है।
धर्म उसका पालन करता है।

जो धर्मकी मर्यादापर चलता है,

उसकी मर्यादा बची रहती है।

राजा शिबि धर्मात्मा थे।

राजा रन्तिदेव धर्मात्मा थे।
राजा युधिष्ठिर धर्मात्मा थे।

धर्मात्माओंका नाम अमर हुआ।
धर्मात्माओंको भगवान्‌का धाम मिला।
धर्मात्माओंका संसार सम्मान करता है।

धर्मके पालनसे सुख मिलता है।
धर्मके पालनसे शान्ति मिलती है।
धर्मके पालनसे यश बढ़ता है।
धर्मके पालनसे कल्याण होता है।

जहाँ धर्म है, वहाँ दुःख नहीं।
जहाँ धर्म है, वहाँ अशान्ति नहीं।
जहाँ धर्म है, वहाँ झगड़े-झंझट नहीं।

जहाँ धर्म है, वहाँ दया है।
जहाँ धर्म है, वहाँ सत्य है।
जहाँ धर्म है, वहाँ क्षमा है।
जहाँ धर्म है, वहाँ उदारता है।
जहाँ धर्म है, वहाँ त्याग है।
जहाँ धर्म है, वहाँ आनन्द है।

हम धर्मका पालन करेंगे।
हम धर्मकी मर्यादापर चलेंगे।
हम धर्मानुकूल व्यवहार करेंगे।

(३)

जातिकी मर्यादा

अंग्रेजोंमें जातिका गौरव होता है।
जर्मनोंमें जातिका गौरव होता है।
जापानियोंमें जातिका गौरव होता है।

जातिका गौरव सम्मानके योग्य है।
जातिकी मर्यादा सम्मानके योग्य है।
जातिकी मर्यादा पालनके योग्य है।

जातिकी मर्यादाको तोड़ना ठीक नहीं।
जातिकी मर्यादाका उल्लङ्घन ठीक नहीं।
जातिकी मर्यादाका उपहास ठीक नहीं।
दूसरोंको छोटा माननेमें जातिकी मर्यादा नहीं है।
दूसरोंसे घृणा करनेमें जातिकी मर्यादा नहीं है।
दूसरोंका तिरस्कार करनेमें जातिकी मर्यादा नहीं है।
जातिकी मर्यादा सदाचारकी रक्षामें है।
जातिकी मर्यादा संयमकी रक्षामें है।
जातिकी मर्यादा नियमोंके पालनमें है।

अपनी जातिके गौरवकी रक्षा करो।
दूसरी जातियोंका सम्मान करो।
अपनी जातिकी मर्यादाका पालन करो।
दूसरी जातियोंकी मर्यादाओंका आदर करो।
अपनी जातिके नियमोंका पालन करो।
दूसरी जातियोंके नियमोंका आदर करो।

(४)

त्यागने योग्य काम

झूठ बोले, वह झूठा।
चोरी करे, वह चोर।
निन्दा करे, वह निन्दक।
चुगली करे, वह चुगलखोर।
ईर्ष्या करे, वह ईर्ष्यालु।
घमंड करे, वह घमंडी।
गाली दे, वह असभ्य।
व्यङ्ग्य बोले, वह क्रूर।

तुम झूठे नहीं हो।
तुम चोर नहीं हो।
तुम निन्दक नहीं हो।
तुम चुगलखोर नहीं हो।
तुम ईर्ष्यालु नहीं।
तुम घमंडी नहीं।
तुम असभ्य नहीं।
तुम क्रूर नहीं।

कभी झूठ मत बोलो।
कोई तुम्हें झूठा न समझे।
कभी चोरी मत करो।
कोई तुम्हें चोर न समझे।

दूसरोंकी निन्दा मत करो।
निन्दक मत कहलाओ।
दूसरोंकी चुगली मत करो।
चुगलखोर मत कहलाओ।

किसीसे ईर्ष्या मत करो।
लोग तुम्हें ईर्ष्यालु न मानें।
घमंड मत किया करो।
लोग तुम्हें घमंडी न मानें।

किसीको गाली मत दो।
कोई तुम्हें असभ्य न बतावे।
किसीसे व्यङ्ग्य मत बोलो।
कोई तुम्हें क्रूर न कहे।

बिना पूछे न करो

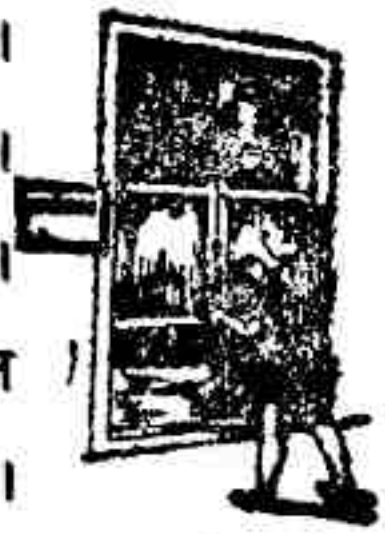

बिना पूछे किसीकी कोई वस्तु मत लो।
बिना पूछे किसी कार्यालयमें मत जाओ।
बिना पूछे किसीके घरमें मत घुसो।
बिना पूछे किसीकी कोई वस्तु मत हटाओ।

तुमसे बिना पूछे कोई तुम्हारी वस्तु ले ले,
तुम्हें बुरा लगेगा या नहीं ?
तुमसे बिना पूछे कोई तुम्हारा सामान हटा दे,
तुम्हें बुरा लगेगा या नहीं ?
तुमसे बिना पूछे कोई तुम्हारे पास आ जाय,
तुम्हारे काममें बाधा पड़ेगी या नहीं ?
तुमसे बिना पूछे कोई तुम्हारे घरमें घुस आये,
तुम्हें बुरा लगेगा या नहीं ?

ऐसा काम करो, जिससे किसीको बुरा न लगे।
ऐसा काम करो, जिससे किसीको बाधा न पहुँचे।
ऐसा काम करो, जिससे किसीको असुविधा न हो।

═══ ★ ═══

(६)

क्षमा माँग लो

कभी भूलसे किसीको कोई कड़ी बात

कह दो तो तुरंत क्षमा माँग लो।

कभी भूलसे किसीको दुःख पहुँचानेवाला

काम हो जाय तो तुरंत क्षमा माँग लो।

कभी भूलसे रास्तेमें किसीसे टकरा जाओ।

तो तुरंत क्षमा माँग लो।

कभी भूलसे किसीकी वस्तु उठा लो तो

तुरंत क्षमा माँग लो।

अपनी भूल स्वीकार कर लेना
अच्छे पुरुषका लक्षण है।
अपनी भूलके लिये क्षमा माँग
लेना अच्छे पुरुषका लक्षण है।
अपनी भूल सुधार लेना अच्छे
पुरुषका लक्षण है।
अपनी भूलको ठीक मत बताओ।
अपनी भूलका समर्थन मत करो।
अपनी भूलके कारण मत गिनाओ।
अपनी भूल झटपट मान लो।
अपनी भूल सुधार लो।
अपनी भूलके लिये क्षमा माँग लो।

(७)

त्याग

बंदर पकड़नेवाले छोटे
मुँहका बर्तन गाड़ते हैं।
बर्तनमें चने भरते हैं।
बंदर आता है।

बर्तनमें हाथ डालता है।
चनेकी मुट्ठी भरता है।
मुट्ठी बर्तनसे निकलती नहीं।
बंदर चने छोड़ता नहीं।
बंदर पकड़ा जाता है।
लोभमें आकर बंदर पकड़ा जाता है।
तुम बंदरकी भाँति लोभ मत करो।

त्यागमें विवेक है।
त्यागमें उदारता है।
त्यागमें मनुष्यता है।
त्यागमें धर्म है।

त्यागमें दया है।

त्यागमें यश है।

त्यागसे भगवान् प्रसन्न होते हैं।

दूसरोंकी भलाईके लिये अपने स्वार्थका त्याग करो।
घरकी भलाईके लिये अपने स्वार्थका त्याग करो।
गाँवकी भलाईके लिये घरके स्वार्थका त्याग करो।
जातिकी भलाईके लिये गाँवके स्वार्थका त्याग करो।
देशकी भलाईके लिये गाँवके स्वार्थका त्याग करो।
विश्वकी भलाईके लिये देशके स्वार्थका त्याग करो।

त्यागके बिना परोपकार नहीं होता।
त्यागके बिना धर्म नहीं होता।
त्यागके बिना शान्ति नहीं मिलती।
तुम त्याग करना सीखो।

(८)

महान् बनोगे ?

तुम महान् बनना चाहते हो ?
तुम्हारे मनमें महान् बननेकी इच्छा है ?
तुम भी महापुरुष बनना चाहते हो ?

महान् बनना चाहो तो—
तड़क-भड़क छोड़ दो।
ठाट-बाटका मोह छोड़ दो।
बड़े बँगले-कोठीका मोह छोड़ दो।
मोटरका मोह छोड़ दो।

महान् बनना चाहो तो—
माल-मलीदेका मोह छोड़ दो।
बढ़िया भोजनका मोह छोड़ दो।
मौज-शौकका मोह छोड़ दो।
सैर-सपाटेका मोह छोड़ दो।

महान् बनना चाहो तो—
सीधे-सादे कपड़े पहिनो।

सीधा-सादा भोजन करो।
झोपड़ीमें रहनेको तैयार रहो।
पैदल चलनेको तैयार रहो।
कष्ट उठानेको तैयार रहो।

महान् बनना चाहो तो—
सत्यका पालन करो।
त्याग करना स्वभाव बनाओ।
दुखियोंकी सेवा करो।
अपराधको क्षमा करना सीखो।

महान् बनना चाहो तो—
सीधे बनो, सच्चे बनो।
सदाचारी बनो, संयमी बनो।
नियम-पालनका स्वभाव बनाओ।
आलस्य छोड़ो, प्रमाद छोड़ो।
समयका ठीक-ठीक ध्यान रखो।

महान् बनना चाहो तो—
भगवान्‌में मन लगाओ।
सबसे महान् भगवान् हैं।
भगवान्‌को धर्म प्यारा है।

धर्मका पालन करो।
भगवान् दीनबन्धु हैं।
दीन-दुखियोंकी सेवा करो।

═══ ★ ═══

(९)

स्मरण रखो

स्मरण रखो—

जो सफाई नहीं रखेगा, वह बीमार पड़ेगा।
जो सफाई नहीं रखेगा, वह अशान्त रहेगा।
जो सफाई नहीं रखेगा, उससे लोग घृणा करेंगे।

स्मरण रखो—

जो सदाचारी नहीं है, वह बीमार होगा।
जो सदाचारी नहीं है, वह अशान्त रहेगा।
जो सदाचारी नहीं है, उससे लोग घृणा करेंगे।

स्मरण रखो—

जो परिश्रमी नहीं बनेगा, वह बीमार पड़ेगा।
जो परिश्रमी नहीं बनेगा, वह अशान्त रहेगा।
जो परिश्रमी नहीं बनेगा, वह कहीं सफल नहीं होगा।

स्मरण रखो—

सत्यवादीका आदर होता है।
सदाचारीका आदर होता है।
स्वच्छ और पवित्र रहनेवालेका आदर होता है।

स्मरण रखो—

सफल वह होता है, जो नियमसे चलता है।
सफल वह होता है, जो सावधान रहता है।
सफल वह होता है, जो आलस्य नहीं करता।

स्मरण रखो—

सफल वह होता है, जो घमंड नहीं करता।
सफल वह होता है, जो हठ नहीं करता।
सफल वह होता है, जो क्रोध नहीं करता।

(१०)

धनका उपयोग

भगवान्‌ने तुम्हें धनी बनाया।
तुमने पहले जन्ममें पुण्य किये थे।
पुण्यका फल है धन और सुख।
तुम्हारे पुण्योंने तुम्हें धनी बनाया।

धन पाकर तुम क्या करोगे ?
बड़ी भारी कोठी बनवाओगे ?
बहुत अच्छी मोटर लोगे ?
खूब तड़क-भड़कसे रहोगे ?
यह तो धनका ठीक उपयोग नहीं।

धन पाकर तुम क्या करोगे ?
बहुत-से नौकर रखोगे ?
सब लोगोंपर रोब गाँठोगे ?
सबपर अपनी धाक जमाओगे ?
यह तो धनका ठीक उपयोग नहीं है।

धन पाकर घमंड मत करो।
धन पाकर किसीका अपमान मत करो।
धन पाकर किसीको छोटा मत समझो।
धन पाकर गरीबोंकी सेवा करो।
धन पाकर निर्धनोंकी सहायता करो।
धन पाकर दूसरोंकी सहायता करो।
यह धनका ठीक उपयोग है।

धन पाकर संयम मत छोड़ो।
धन पाकर सदाचार मत छोड़ो।
धन पाकर सादगी मत छोड़ो।
धन पाकर आलसी मत बनो।
धन पाकर अभिमानी मत बनो।
धन पाकर अनुदार मत बनो।
जो आलसी बनेगा उसका धन नष्ट हो जायगा।
जो अभिमानी बनेगा, उसका धन नष्ट हो जायगा।
जो दूसरोंका तिरस्कार करेगा, उसका धन नष्ट हो जायगा।
जो सदाचारी नहीं रहेगा, उसका धन नष्ट हो जायगा।
जो सादगीसे नहीं रहेगा, उसका धन नष्ट हो जायगा।
जो दूसरोंका उपकार नहीं करेगा, उसका धन नष्ट हो जायगा।

धनकी शोभा है सदाचार।

धनकी शोभा है सादगी।
धनकी शोभा है उदारता।
धनकी शोभा है संयम।
धनकी शोभा है उद्योग।

धनका सदुपयोग है दान करना।
धनका सदुपयोग है दीनोंकी सहायता करना।
धनका सदुपयोग है धनको लोकहितमें लगाना।

(११)

बलका उपयोग

भगवान्‌ने तुम्हें बलवान् बनाया।
तुम्हारे शरीरमें बल है।
तुम्हारे पास साथियोंका बल है।
इस बलसे तुम क्या करोगे ?

बलसे तुम लोगोंपर रोब जमाओगे ?
बलसे तुम लोगोंको धमकाओगे ?
बलसे तुम औरोंको हराओगे ?
यह तो बलका ठीक उपयोग नहीं है।

भूलो मत—बल रोगसे नष्ट हो जाता है।
भूलो मत—बल बुढ़ापेमें नष्ट हो जाता है।
भूलो मत—बल सदा नहीं रहता।

दूसरोंको धमकाना बलका दुरुपयोग है।
दूसरोंको डराना बलका दुरुपयोग है।
दूसरोंको सताना बलका दुरुपयोग है।

भगवान्‌ने तुम्हें बल दिया।
भगवान्‌ने तुम्हें बलवान् बनाया।
बलका दुरुपयोग करोगे, बल नष्ट हो जायगा।

बलकी शोभा है—नम्रता।
बलकी शोभा है—क्षमा।
बलकी शोभा है—संयम।

दुर्बलोंकी रक्षा करना बलका सदुपयोग है।
भयभीतोंको निर्भय करना बलका सदुपयोग है।
दुःखमें पड़ेकी सहायता करना बलका सदुपयोग है।

बल पाकर तुम क्या करोगे—
दुर्बल-दुखियोंकी सहायता करेंगे।
भयमें पड़े लोगोंकी सहायता करेंगे।
कष्टमें पड़े लोगोंकी सहायता करेंगे।

—★—

(१२)

बुद्धिका उपयोग

भगवान्‌ने तुम्हें बुद्धिमान् बनाया।
भगवान्‌ने तुम्हें बुद्धि दी।
भगवान्‌ने तुम्हें प्रतिभा दी।
भगवान्‌ने तुम्हें विद्या दी।

बुद्धिमान् होकर तुम क्या करोगे ?
लोगोंके ऊपर रोब जमाओगे ?
लोगोंको तर्कमें हराओगे ?
लोगोंसे अपनी बात मनवाओगे ?
यह तो बुद्धिका ठीक उपयोग नहीं है।

विद्वान् होकर घमंडी हुआ तो वह मूर्ख ही है।
बुद्धिमान् होकर घमंडी हुआ तो वह मूर्ख ही है।
विद्वान्-बुद्धिमान् होकर सदाचारी न हुआ तो वह मूर्ख ही है।
विद्वान्-बुद्धिमान् होकर संयमी न हुआ तो वह मूर्ख ही है।
विद्वान्-बुद्धिमान् होकर विनयी न हुआ तो वह मूर्ख ही है।

बुद्धिमान् होकर मर्यादाके अनुसार न चले
—उसकी बुद्धि व्यर्थ।

बुद्धिमान् होकर धर्मके अनुसार न चले
—उसकी बुद्धि व्यर्थ।

बुद्धिमान् होकर सदाचारके अनुसार न चले
—उसकी बुद्धि व्यर्थ।

विद्या-बुद्धिकी शोभा है नम्रता।
विद्या-बुद्धिकी शोभा है सदाचार।
विद्या बुद्धिकी शोभा है धर्मपालन।

बुद्धिमान् होकर सदाचारका पालन करो।
बुद्धिमान् होकर धर्मका पालन करो।
बुद्धिमान् होकर मर्यादाका पालन करो।

बुद्धिमान् हो तो दूसरोंको सदाचार सिखाओ।
बुद्धिमान् हो तो दूसरोंको धर्म सिखाओ।
बुद्धिमान् हो तो दूसरोंको मर्यादा सिखाओ।

दूसरोंको ज्ञान दे, वह बुद्धिमान्।
दूसरोंकी भूल सुधार दे, वह बुद्धिमान्।
दूसरोंपर क्रोध न करे, वह बुद्धिमान्।
दूसरोंकी भूल क्षमा कर दे, वह बुद्धिमान्।

(१३)

साथ-साथ

सब मित्र साथ-साथ रहो।

सब मित्र साथ-साथ खेलो।

सब मित्र साथ-साथ पढ़ो।

साथ-साथ श्रम करो।
साथ-साथ विश्राम करो।
साथ-साथ काम करो।

सुखमें साथ-साथ रहो।
दुःखमें साथ-साथ रहो।
आनन्दमें साथ-साथ रहो।
शोकमें साथ-साथ रहो।

सम्पन्नतामें साथ रहो।
दरिद्रतामें साथ रहो।
सम्पत्तिमें साथ रहो।
विपत्तिमें साथ रहो।

सुखमें मित्रके साथ सुख न भोगो, हानि नहीं।
आनन्दमें मित्रके साथ आनन्द न भोगो, हानि नहीं।
सम्पत्तिमें मित्रके साथ सुख न भोगो, हानि नहीं।

दुःखमें मित्रके साथ रहो।
शोकमें मित्रके साथ रहो।
विपत्तिमें मित्रके साथ रहो।
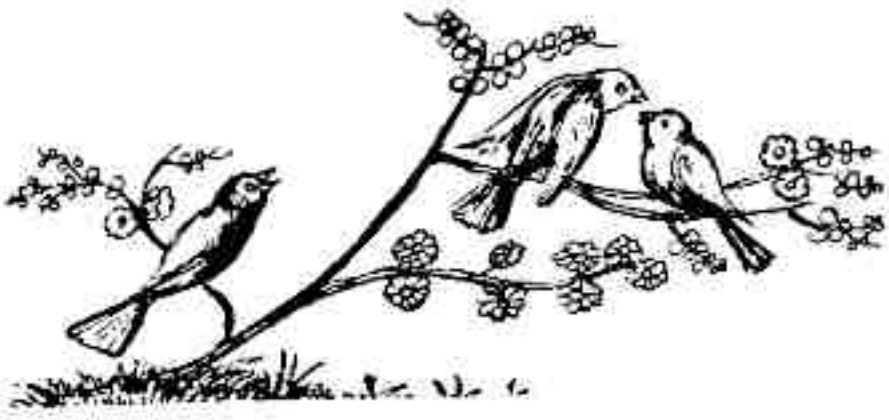
दुःखमें साथ दे, वह सच्चा मित्र।
शोकमें साथ दे, वह सच्चा मित्र।
विपत्तिमें साथ दे, वह सच्चा मित्र।